Peer Reviewed Journal for M. Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & Colleges

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :
Swadeshi Research Foundation & Publication
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

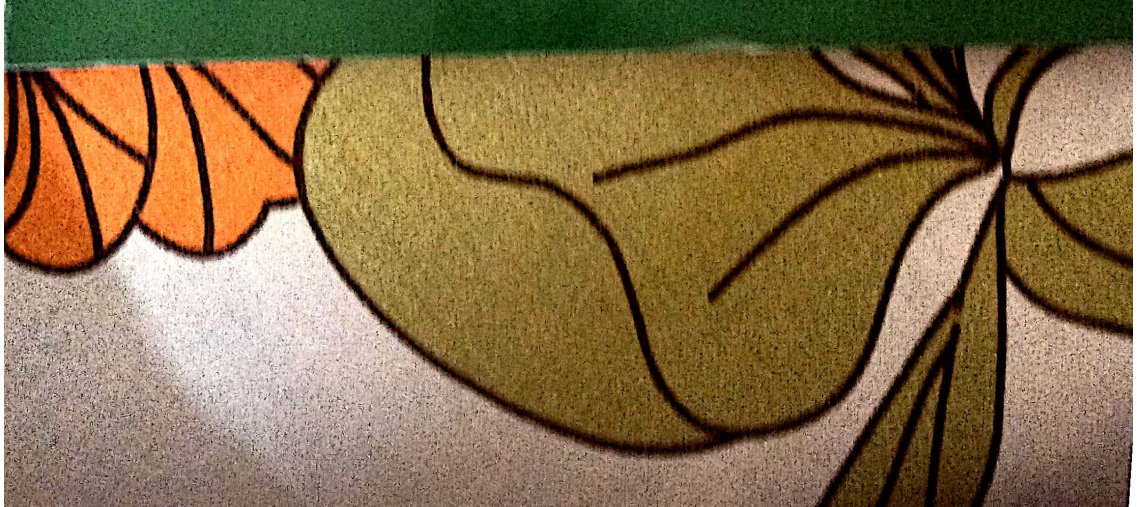

Scanned with CamScanner

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	बालाघाट जिले की बैगा जनजाति में पोषण स्तर एवं स्वास्थ्य दशाओं का भौगोलिक अध्ययन	मीनाक्षी मेरावी	1-11
2	कबीर के काव्य मे प्रेम और भक्ति	डॉ. संगीता त्यागी	12-13
3	स्वामी विवेकानंद के दर्शन में नव्य वेदान्त एवं धर्म का समावेशी चिंतन	कृति पटेल	14-16
4	पुरातत्व संग्रहालयों में प्रदर्शित दशावतारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में)	रेनु चौधरी	17-22
5	सीहोर की ताम्राश्मीय संस्कृति	ज्ञानप्रकाश सिंह यादव	23-25
6	मासिक धर्म की समस्याओं पर योग का प्रभाव किशोरियों के संदर्भ में	डॉ. मनोज कुमार शर्मा लता पाटिल	26-29
7	स्वस्थ गर्भस्थ शिशु : योग ग्रामीण महिलाओं के संदर्भ में	डॉ. मनोज शर्मा रूबी श्रीवास्तव	30-34
8	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका	डॉ. सुभाष कुमार सोनी	35-38
9	भारत में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन	सुभाष कुमार	39-45
10	विश्व व्यापार संगठन के प्रावधानों का भारतीय कृषि पर प्रभाव एवं उभरती चुनौतियाँ	डॉ. प्रियंका दुबे	46-51
11	मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में महिलाओं की स्थिति	डॉ. मंगलेश्वरी जोशी चाँदनी जैन	52-53
12	73 वें संविधान में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका	डॉ. राधिकेश जोशी	54-56
13	बाल अपराध के प्रमुख कारण	डॉ. विश्वास चौहान गीता परतती	57-60
14	महाभारत काल में राजा का स्वरूप	मंजू अवस्थी ज्योति शर्मा	61-64
15	महेश्वर एवं ओंकारेश्वर नदियों के संरक्षण पर सरकार के विभिन्न कार्यक्रम	डॉ. पी.डी. ज्ञानानी श्याम सिन्हा	65-68
16	असंगठित क्षेत्र में न्यूनतम मजदूरी की विभिन्न स्थिति	डॉ. मोहम्मद नजमी विपिन सोनी	69-71
17	कमलेश बख्शी के उपन्यासों में अस्मिता की तलाश	ममता सोलंकी	72-74
18	शिल्पी श्री हरि श्रीवास्तव जी की कला यात्रा	तनु दुबे डॉ. (श्रीमती) किरण शुक्ला भूपेन्द्र निगम	75-78
19	भारत में संचार प्रौद्योगिकी का विकास	डॉ. नुपूर निखिल देशकर अंकित पाण्डेय	79-81
20	दरभंगा जिला में कृषि विविधीकरण की सार्थकता	अनामिका कुमारी प्रो. हिमांशु शेखर	82-84
21	संस्कृत शिक्षण में अधुनिक मूल्यांकन पद्धतियों का प्रयोग	डॉ. रश्मि जैन	85-89
22	भगिनी निवेदिता के शैक्षिक विचार	योगेश कुमार सिंह	90-94
23	पंचायतीराज में महिला सशक्तिकरण तथा ग्रामीण विकास पर गाँधीवादी विचार का प्रभाव	सुमित्रा बेनल	95-96
24	प्लास्टिक का बढ़ता हुआ उपयोग : पर्यावरण पर गंभीर खतरा	अपर्णा श्रीवास्तव	97-99
25	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	डॉ. शकीला खान	100-103

Scanned with CamScan

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. - [illegible], No. - [illegible] July [illegible]
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Referred, Review, Indexing & Impact Factor - 8.2 Research Journal

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

डॉ. शकीला खान
(अतिथि शिक्षक), शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर

सारांश :– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बताते हुए भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना। प्राचीन में महिलाओं की स्थिति काफी शोचनीय थी। महिलाओं को शक्ति, धन ज्ञान का प्रतीक समझा जाता था परन्तु फिर भी व्यावहारिक रूप में महिलाओं की स्थिति में कई प्रश्नवाचक चिन्ह लगे हुए थे। स्त्री महिलाओं को पति की सेवक, दासी समझा जाता था, स्त्री शिक्षा से वंचित रखा जाता था। सम्पत्ति पर अधिकार नहीं था। मध्यकाल में तो महिलाओं का जीवन दुर्गम बन गया था उत्तरोत्तर गिरावट आयी, रूढ़ियां जकड़ती गई, नारी अबला, भोग्या, बनकर रह गयी।

हमारे समाज में नारी की स्थिति वह नहीं है जो होनी चाहिए। नारी को गौण स्थान प्राप्त है जन्म से ही लड़का व लड़की में भेद किया जाता है जैसे ही बच्ची बड़ी होती जाती है पाबंदियों की जंजीरें कड़ी होती जाती है। विवाह के बाजार में उसको केवल एक वस्तु की तरह समझा जाता है। सामाजिक जीवन का रथ एक पहिए से नहीं चल सकता किन्तु फिर भी न जाने क्यों दूसरे पहिए को महत्व क्यों है। महिलाएं जनसंख्या का लगभग आधा भाग होती है। यदि आधा भाग अविकसित रह जाएगा तो कोई भी देश अविकसित व्यक्तित्व से महान नहीं बनेगा यही कारण है कि भारत उन्नति की दौड़ में पीछे रह गया है।

अभी भी देर नहीं है आइए हम महिला को वह स्थान प्रदान करें जिसकी वह अधिकारणी है। आजादी के बाद हमने इस दिशा में सोचना और कार्य करना प्रारंभ किया एवं सोचनीय स्थिति से दलदल से निकालने का प्रयास किया है। दहेज निषेध अधिनियम, मातृत्व लाभ अधिनियम, समान पारिश्रमिक अधिनियम शारदा एक्ट आदि कुछ उपाय है जिनको महिलाओं की दशा सुधारने के लिए अपनाया गया है कई बार उतार चढ़ाव के बाद आज वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में कई परिवर्तन व सुधार हुए प्रस्तुत अध्ययन में यही देखने का प्रयास किया गया कि महिलाओं की विभिन्न युगों में स्थिति क्या थी और वर्तमान में किस प्रकार सुधार हो रहा है।

की वर्ड :– भारतीय समाज, महिलाएं, विशेषताएं, सुधार, स्थिति।

भारत में हमेशा से ही सैद्धांतिक रूप में नारी की मर्यादा रही है और उसका आदर हुआ है नारी शक्ति, धन और ज्ञान का प्रतीक मानी गई है अपने देश को हम भारत माता कहकर उसके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते है। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी व्यावहारिक रूप से विभिन्न कालों में भारत में स्त्रियों की स्थिति उठती और गिरती रही है।

वैदिक युग :– यह हिन्दू समाज का स्वर्ण युग था। इस युग में नारी की स्थिति न केवल अच्छी थी बल्कि अत्यन्त उन्नत थी वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति उनसे आत्म विकास, शिक्षा, विवाह, सम्पत्ति आदि के संबंध में प्रायः पुरुषों के समान थी। ऋग्वेद के अनुसार पत्नी ही घर है महाभारत के कथानुसार घर, घर नहीं यदि उस घर में पत्नी नहीं।

वैदिक युग में लड़कियों की पवित्रता पर कोई शक नहीं था न ही शिक्षा प्राप्त करने के संबंध में कोई प्रतिबंध था – वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था, सम्पत्ति में उनका बराबरी का हक था। सभा व समितियों में उनका बराबरी का हक था। सभा तथा समितियों में वे स्वतंत्रपूर्वक भाग लेती थी किसी भी समाज में नारी की स्थिति उस देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रगति को बताती है और वहां की सभ्यता की सच्ची परख वहां की नारी के इतिहास से पता चलता है। परन्तु ऋग्वेद में कुछ ऐसी उक्तियां भी है। जो महिलाओं के विरोध में दिखाई पड़ती है मैत्री संहिता में स्त्री को झूठ का अवतार कहा गया है। स्त्रियों के साथ कोई मित्रता नहीं है। इनका हृदय भेड़ियों का हृदय है। स्त्रियों को दास की सेना का अस्त्र शस्त्र कहा गया। स्पष्ट है कि वैदिक काल में भी कहीं न कहीं स्त्रियों को नीची दृष्टि से देखा जाता था फिर भी हिन्दू जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह समान रूप से आदर और प्रतिष्ठित थी। शिक्षा धर्म, व्यक्तित्व, सामाजिक विकास